

## आचार्य वनिोबा भावे

### प्रिलमिस के लयि:

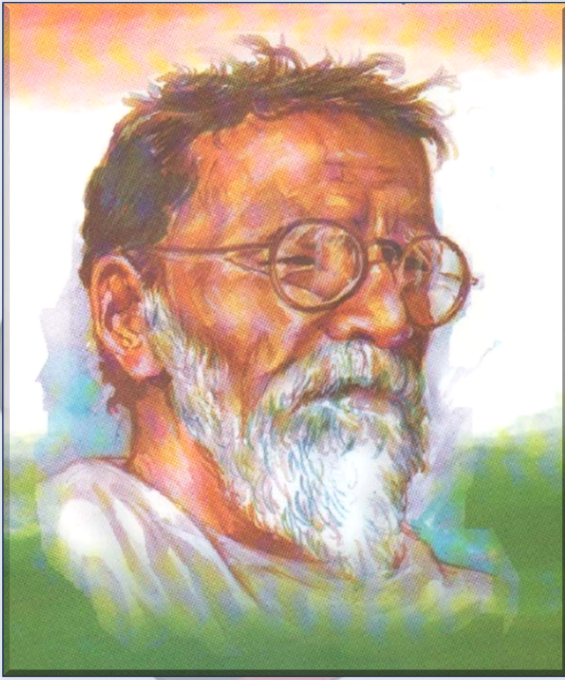
आधुनकि भारत के महत्त्वपूर्ण व्यक्तत्व

### मेन्स के लयि:

आधुनकि भारतीय इतहिस, महत्त्वपूर्ण व्यक्तत्व, राष्ट्रिय आन्दोलन

### चर्चा में क्यों?

हाल ही में प्रधानमंत्री ने आचार्य वनिोबा भावे की जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पति की ।



//

## आचार्य वनिोबा भावे

- **जन्म:**
  - वनियाक नरहरिभावे का जन्म 11 सतिंबर, 1895 को गागोडे, बॉम्बे प्रेसीडेंसी (वर्तमान महाराष्ट्र) में हुआ था ।
  - उनके पति और माता का नाम क्रमशः नरहरि शंभू राव और रुक्मिणी देवी था ।
- **संक्षपित परचिय:**
  - आचार्य वनिोबा भावे एक अहसिक और स्वतंत्रता के कार्यकर्ता, समाज सुधारक और आध्यात्मिक शिक्षक थे ।
  - महात्मा गांधी के एक उत्साही अनुयायी होने के नाते वनिोबा ने अहिसा और समानता के अपने सिद्धांतों का पालन किया ।
  - उन्होंने अपना जीवन गरीबों और दलितों की सेवा हेतु समर्पति कर दिया तथा उनके अधिकारों के लिये खड़े हुए ।
- **पुरस्कार और मान्यता:**

- वनिोबा भावे वर्ष 1958 में [रेमन मैगसेसे पुरस्कार](#) प्राप्त करने वाले पहले अंतरराष्ट्रीय और भारतीय व्यक्तित्व थे।
- उन्हें 1983 में मरणोपरान्त [भारत रत्न](#) (भारत का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार) से भी सम्मानित किया गया था।
- **गांधी के साथ जुड़ाव:**
  - वनिोबा भावे ने 7 जून, 1916 को गांधी से मुलाकात की और आश्रम में निवास किया।
    - गांधी की शिकषाओं ने भावे को भारतीय ग्रामीण जीवन को बेहतर बनाने के लिये समर्पित जीवन की ओर अग्रसर किया।
  - आश्रम के एक अन्य सदस्य मामा फडके ने उन्हें वनिोबा (एक पारंपरिक मराठी वंशज जो महान सम्मान का प्रतीक है) नाम दिया था।
  - 8 अप्रैल, 1921 को वनिोबा भावे, गांधी के निर्देशों के तहत वर्धा में एक गांधी-आश्रम का प्रभार लेने के लिये वर्धा गए।
    - वर्धा में अपने प्रवास के दौरान वर्ष 1923 में उन्होंने मराठी में एक मासिक 'महाराष्ट्र धर्म' का प्रकाशन किया, जिसमें उपनिषदों पर उनके नबिंध छापे गए थे।
- **स्वतंत्रता संग्राम में भूमिका:**
  - उन्होंने [असहयोग आंदोलन](#) के कार्यक्रमों में हसिसा लिया और वंशज रूप से आयातित वदेशी वस्तुओं के स्थान पर स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग का आह्वान किया।
  - उन्होंने खादी का **कटाई करने वाला चरखे का उपयोग** किया और दूसरों से ऐसा करने का आग्रह किया, जिसके परिणामस्वरूप कपड़े का बड़े पैमाने पर उत्पादन हुआ।
  - वर्ष 1932 में, वनिोबा को छह महीने के लिये धूलिया जेल भेज दिया गया था क्योंकि उन पर ब्रिटिश शासन के खिलाफ साजिश का आरोप लगाया गया था।
    - कारावास के दौरान उन्होंने साथी कैदियों को '**भगवद गीता**' के विभिन्न वंशजों को मराठी में समझाया।
    - धूलिया जेल में उनके द्वारा गीता पर दिये गए सभी व्याख्यानो को एकत्र किया गया और बाद में पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया।
  - वर्ष 1940 में उन्हें भारत में गांधीजी द्वारा ब्रिटिश राज के खिलाफ **पहले व्यक्तिगत सत्याग्रही** (सामूहिक कार्रवाई के बजाय सत्य के लिये खड़े होने वाले व्यक्ति) के रूप में चुना गया था।
  - 1920 और 1930 के दशक के दौरान भावे को कई बार बंदी बनाया गया तथा ब्रिटिश शासन के खिलाफ अहसिक प्रतिरोध के लिये 40 के दशक में पाँच साल की जेल की सजा दी गई थी।
  - उन्हें आचार्य (शिक्षक) की सम्मानित उपाधि दी गई थी।
- **सामाजिक कार्यों में भूमिका:**
  - उन्होंने समाज में व्याप्त असमानता जैसी सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने की दशा में अथक प्रयास किया।
  - गांधीजी द्वारा स्थापित उदाहरणों से प्रभावित होकर **उन्होंने उन लोगों का मुद्दा उठाया जिनमें गांधीजी द्वारा हरजिन कहा जाता था।**
  - उन्होंने गांधीजी के सर्वोदय शब्द को अपनाया जिसका अर्थ- "सभी के लिये प्रगति" (Progress for All) है।
  - इनके नेतृत्व में **1950 के दशक के दौरान सर्वोदय आंदोलन ने विभिन्न कार्यक्रमों को लागू किया गया जिनमें प्रमुख भूदान आंदोलन है।**
- **भूदान आंदोलन:**
  - वर्ष 1951 में तेलंगाना के पोचमपल्ली (Pochampalli) गाँव के हरजिनो ने उनसे जीविकोपार्जन के लिये लगभग 80 एकड़ भूमि प्रदान कराने का अनुरोध किया।
  - 19 वीं 1951 को **पोचमपल्ली गाँव के हरजिनो ने उनसे जीविकोपार्जन के लिये लगभग 80 एकड़ भूमि प्रदान करने का अनुरोध किया।**
  - वनिोबा ने गाँव के **जमींदारों को आगे आने और हरजिनो को संरक्षित करने के लिये कहा।**
    - उसके बाद एक जमींदार ने आगे बढ़कर आवश्यक भूमि प्रदान करने की पेशकश की।
    - यह भूदान (भूमिका उपहार) आंदोलन की शुरुआत थी।
  - यह आंदोलन 13 वर्षों तक जारी रहा और इस दौरान वनिोबा भावे ने देश के विभिन्न हसिसों (कुल 58,741 किलोमीटर की दूरी) का भ्रमण किया।
  - वह लगभग 4.4 मिलियन एकड़ भूमि एकत्र करने में सफल रहे, जिसमें से लगभग 1.3 मिलियन को गरीब भूमिहीन किसानों के बीच वितरित किया गया।
  - इस आंदोलन ने दुनिया भर से प्रशंसको को आकर्षित किया तथा स्वैच्छिक सामाजिक न्याय को जागृत करने हेतु इस तरह के एकमात्र प्रयोग के कारण इसकी सराहना की गई।
- **धार्मिक कार्य:**
  - उन्होंने जीवन के एक सरल तरीके को बढ़ावा देने के लिये कई आश्रम स्थापित किये, जो विलासिता रहित थे, क्योंकि यह लोगों का ध्यान ईश्वर की भक्ति से हटा देता है।
  - महात्मा गांधी की शिकषाओं की तर्ज पर आत्मनिर्भरता के उद्देश्य से उन्होंने वर्ष 1959 में महिलाओं के लिये 'ब्रह्म वदिया मंदिर' की स्थापना की।
  - उन्होंने गोहत्या पर कड़ा रुख अपनाया और इसके प्रतिबंधित होने तक उपवास करने की घोषणा की।
- **साहित्यिक रचना:**
  - उनकी महत्त्वपूर्ण पुस्तकों में स्वराज्य शास्त्र, गीता प्रवचन और तीसरी शक्ति आदि शामिल हैं।
- **मृत्यु**
  - वर्ष 1982 में वर्द्धा, महाराष्ट्र में उनका निधन हो गया।

**स्रोत: पी.आई.बी.**

